# लेव तोलस्तोय की 'शिक्षा शास्त्रीय रचनाएं'

❑ मनोज कुमार

''जब मैं स्कूल में प्रवेश करता हूँ और चमकीली आंखों वाले तथा चेहरे पर देवदूत जैसे भाव लिये हुए इन फटेहाल गंदे मरियल बच्चों को देखता हूँ तो मुझे ऐसी आशंका और संत्रास घेर लेते हैं जैसे किसी डूबते आदमी को देखते समय महसूस किये जाते हैं । यहां सचमुच सबसे मूल्यवान चीज डूब रही है यानि वह आध्यात्मिक चीज जो बच्चों की आंखों में इतनी स्पष्ट रूप से दिखाई देती है । मैं जनता के लिये शिक्षा केवल इसलिये चाहता हूँ कि वहां डूब रहे उन पुश्किनों, ओस्त्रोग्रारस्कियो, फिलारेंतो और लोमोनोसोवों को बचा सकूं।''

- लेव तोलस्ताय

यह तोलस्तोय के शिक्षा-दर्शन के सरोकार का उन्हीं के शब्दों में सार-कथन है : समाज के जनतांत्रिकरण को शिक्षा की आधारभूमि मानना, मनुष्य की आध्यात्मिक समृद्धि को भी शिक्षा के व्यापक ध्येय में शामिल करना और सार्वजनिक शिक्षा में राज्य के हस्तक्षेप का निषेध तालस्ताय की कुछ ऐसी मान्यताएं हैं जिन पर आज भी चिंतन ओर बहस करने की जरुरत है । यह समीक्षा तालस्ताय की शिक्षा शास्त्रीय अवधारणाओं को रेखांकित करती है । ये धारणायें आज भी महत्वपूर्ण एवं काम की हैं ।

लेव निकोलायेविच तोलस्तोय (1828-1910) एक बड़े शिक्षा सिद्धांतकार थे और बच्चों के पालन-शिक्षण के बारे में उन्होंने नये विचारों, नयी पद्धतियों का प्रवर्तन किया। उनके इन विचारों का आधार उनके अध्यापन से प्राप्त अनुभव व अपने विपुल सृजनात्मक श्रम से प्राप्त अंतर्दृष्टि थी ।

वे अपने शिक्षाशास्त्रीय विचारों को अपने साहित्यिक अवदानों से ज्यादा महत्त्व देते थे ।

मनुष्य के मनस और उसकी आत्मा में पैठ पाने की उनकी लेखकीय क्षमता ने शैक्षिक प्रक्रियाओं के उनके अध्ययन को विराट अंतर्दृष्टि प्रदान की । उन्होंने रूस में प्रचलित पद्धतियों के अलावा पश्चिम यूरोपीय प्रणालियों का विराट अध्ययन किया था ।

उनकी शिक्षा तथा पालन संबंधी धारणाओं का निर्माण एक ऐसे युग में हुआ जो रूस में सामंती राजतंत्र से बुर्जआ राजतंत्र की ओर संक्रमण का युग था । रूस उस समय औद्योगिक विकास के मामले में अन्य पश्चिम यूरोपीय देशों के मुकाबले बेहद पिछड़ा हुआ था । उत्पादक शक्तियों के विकास में मुख्य बाधा भू-दास प्रथा थी। इस प्रथा के मुताबिक किसान जमींदारों की संपत्ति थे और उनकी जमीन को छोड़ नही सकते थे। इसके विरोध में किसानों के विद्रोह होते रहते थे । अंतत: 1861 में जारशाही ने इस प्रथा का उन्मूलन कर दिया। किसान जमीदारों से स्वतंत्र हो गये । वे मुआवजा देकर जमीदारों से जमीन प्राप्त कर सकते थे । और उन्हें अन्य अनेक बेगारों से छुटकारा मिल गया। लेनिन के अनुसार :

''1861 के बाद पुराना पितृसत्तात्मक रूस विश्व पूंजीवाद के प्रभाव से बड़ी तेजी से ढहने लगा। बड़े पैमाने पर शहरों की ओर पलायन होने लगा । रूस में वित्तीय पूंजी, बड़े पैमाने के व्यापार तथा उद्योग बढ़ने लगे ।''

तोलस्तोय ने लिखा है :

''सांसरिक मामलों में बुद्धिमानी यह जानने में नहीं है कि क्या करना चाहिये बल्कि यह जानने में है कि क्या पहले और क्या बाद में करना चाहिये । मैं सोचता हँ कि रूस की प्रगति के लिए टेलीग्राफ, सड़कें, स्टीमर, बंदूकें, साहित्य, कला -अकादमियां आदि कितनी भी उपयोगी क्यों न हों, वे तब तक असमयोचित और निरर्थक़ हैं जब तक कि आंकड़े बताते हैं कि देश की आबादी का 1/100 वां भाग ही पढ़ रहा हो । ये चीजें पैदा तो करोड़ो रूसियों द्वारा की जाती हैं किंतु इनका उपयोग हजारों द्वारा ही किया जाता है ।''

उन्हें लगता था कि जिस सामाजिक बुराई को हम हिंसा और निरकुंशता कहते हैं वह अज्ञान की ही उपज है । तमाम तकनीकी और वैज्ञानिक प्रगति अल्पसंख्यकों को बहुसंख्यकों का शोषण करने का एक औजार प्रदान करती है ।

उन्हें लगता था कि व्यक्तिगत खुशहाली तब तक असंभव है जब तक की रूस की अधिसंख्य आबादी निरक्षर है । अत: उनके तमाम शिक्षाशास्त्रीय विचार इस उद्देश्य से प्रेरित होकर ही पनपे कि

शिक्षा के क्षेत्र में ऐसी वैकल्पिक खोजों और प्रयोगों का मार्ग प्रशस्त किया जाए जो रूस की जनता को एक छोटे से शिक्षित वर्ग के शोषण से मुक्ति दिला सके । समानता उनके शिक्षाशास्त्रीय विचारों का एक महत्त्वपूर्ण संदर्भ है ।

तोलस्तोय मानते थे कि शिक्षाशास्त्र कोई अमूर्त विज्ञान नहीं है। वह एक प्रायोगिक विज्ञान है । शिक्षा के बारे में जो भी कहा जाये उसे प्रमाणित करने का एकमात्र आधार बच्चों के अध्यापन से प्राप्त अनुभव का अध्ययन ही हो सकता है । शिक्षा शास्त्र का विषय अपनी स्वतंत्र अभिव्यक्तियों में बच्चा है।

बचपन बड़े होने की कोई अवस्था नहीं है । बल्कि अपने में पूरा एक स्वायत्त जीवन है । बच्चा भी हमारी तरह ही आदमी है भले ही नन्हा आदमी । वह भी चिंतनशील और विवेकवान होता है । और हमारी ही तरह व्यवस्था पसंद करता है । हमें बच्चे के व्यक्तित्व की गरिमा का आदर करना चाहिए और उसमें बलात हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। आत्मा के कुछ ऐसे भी रहस्य होते हैं जिन्हें हम नहीं जान सकते और कोइ दंड या नसीहत नहीं बल्कि जीवन ही उन्हें प्रभावित कर सकता है। बच्चे प्रकृति से ही बड़ो की अपेक्षा ज्यादा सूक्ष्मदर्शी होते हैं । वे हमारी कमियों या पाखंडों को आसानी से पकड़ लेते हैं । बच्चे हमेशा सम्मोहन की अवस्था में होते हैं । इस सम्मोहन के कारण ही वे सीखते हैं । यह सम्मोहन दो तरह का होता है:

1. सचेतन सम्मोहन
2. अचेतन सम्मोहन

सचेतन सम्मोहन को शिक्षा व अचेतन सम्मोहन ? मिसाल या पालन कहा जा सकता है । हम शिक्षा की तो चिन्ता करते हैं किंतु पालन की नही क्योंकि हमारे समाज खुद भ्रष्ट हैं । आगे चलकर तोलस्तोय ने पालन व शिक्षा के फर्क को नहीं माना और उन्हें मिला दिया, पालन या शिक्षण एक दूसरे से अलग नहीं है । सर्वश्रेष्ठ शिक्षण मिसाल द्वारा शिक्षण है । जीवन की भाषा दूर तक सुनाई देती है ।

तोलस्ताल मानवीय जीवन की सीमा को मानते थे । और प्रेम ही उनकी नजर में एकमात्र अचूक और अटल नियम है ।

स्कूल का सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य यह है कि बच्चा परिवेश से ग्रहण की गई छापों को अपनी चेतना का अंग बना सके । उनके स्वप्नों का स्कूल वह था जो बच्चों को सदा जिज्ञासु, उल्लासित, ग्रहणशील बनाये रखें । उसमें स्वतन्त्र चिंतन को विकसित करें । मानवतावादी आदर्शो के मुताबिक उसमें व्यक्तित्व के निर्माण में सहायक हो, आदर्श स्कूल वह है जो जीवन से अलग नहीं रहता बल्कि जीवन से संबंध रखने में अपनी सार्थकता समझता है ।

स्वतंत्रता उनके शिक्षाशास्त्रीय विचारों का कुंजीपद है । उनकी स्वतंत्र स्कूल व स्वतंत्र शिक्षा की धारणा सत्तात्मक शिक्षाशास्त्र का प्रतिध्रुव पैदा करती है । ज्ञान अगर बच्चे की इच्छा के विरूद्ध थोपा जाता है तो वह अंतरित नहीं किया जा सकता । विद्यार्थी को ज्ञान प्राप्ति के लिए स्वयं प्रयत्न करना होगा । स्वयं अपनी आकांक्षा प्रकट करनी होगी । शिक्षा में स्वतंत्रता से ही विद्यार्थी में सक्रियता आत्मनिर्भरता, चेतनाशीलता, अटलता और अनुशासन जैसे गुण पैदा किये जा सकते हैं ।

शिक्षा की स्वतंत्रता के इसी दृष्टिकोण से उन्होंने शिक्षा में चर्च व सरकार के एकाधिकार को नहीं माना। शिक्षा की स्वतंत्रता का अर्थ है बच्चों के लिए ऐसे स्कूलों की स्थापना जिसके कार्यकलाप का निर्धारण पूरी तरह से जनता स्वयं करती हो।

शिक्षा उन सभी प्रभावों की समष्टि है जो मनुष्य का विकास करते हैं, उसका दृष्टिकोण ज्यादा व्यापक बनाते हैं ।

साक्षरता सिर्फ पढ़ और लिख पाने की कला है किन्तु शिक्षा तथ्यों के सहसंबंधों के ज्ञान को कहते हैं । शिक्षा उन सभी जानकारियों का आत्मसातीकरण है जो विद्यार्थी को जीवन की परिघटनाओं और परिवेशी यथार्थ से संबंधों को समझ पाने में समर्थ बनाती है।

तोलस्तोय नहीं मानते कि साक्षरता, शिक्षा की पहली सीढ़ी है । वे इसे सिर्फ एक उपकरण मात्र मानते हैं शिक्षा का न कि एकमात्र लक्ष्य । ऐसे बहुत से लोग हो सकते हैं जो शिक्षित हैं जैसे बढ़ई, कुम्हार, मोची, किंतु वे निरक्षर हैं । दूसरी तरफ ऐसे भी लोग हैं जो अपनी लिख पढ़ पाने की योग्यता का कोई इस्तेमाल नहीं कर पाते और इस तरह अशिक्षित हैं ।

साक्षरता यदि शिक्षा में परिवर्तित न हो पाये तो वह हानिकारक है, क्योंकि हम जो भी सीखते हैं और यदि वह अनुपयोगी हो तो वह जीवन को नुकसान ही पहुंचाता है ।

अध्यापक होने के लिए अध्यापन की शिक्षा जरुरी नहीं है बल्कि अध्यापक को अपने काम से और अपने विद्यार्थियों से प्रेम होना चाहिये । अध्यापक का काम एक सृजनात्मक काम है। उसे अध्यापन करते समय अपनी समस्त बौद्धिक व नैतिक क्षमता से काम लेना चाहिये । वह हर बच्चे की आयुगत व व्यक्तिगत विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए ही उसे सिखायें। किसी भी चीज को सीखने के लिए बाध्य न करें । अध्यापक का अपने विषय से लगाव और ज्ञान जितना कम होगा उतना ही वह बाध्यकरण की कोशिश करेगा ।

शिक्षक विद्यार्थी संबंध के लिए स्वतंत्रता महत्वपूर्ण अवधारणा है । दोनों ही पक्षों के लिये । विद्यार्थी को जो सिखाया पढ़ाया जा रहा है, वह उसके लिए रोचक और बोधगम्य होना चाहिये । इसके लिए अध्यापक दो अतियों से बचे । वह न बताये जिसे विद्यार्थी जान या समझ नहीं सकता और वह भी न बताये जो वह पहले से ही जानता है । वह परिभाषाओं, सूत्रों, वर्गीकरणों से बचे । ज्यादा पढ़ने, पढ़े हुए को समझने और अपने दिमाग से ज्यादा लिखने को बाध्य करे ।

भूगोल और इतिहास के अध्ययन के लिए बच्चों को ऐतिहासिक व भौगोलिक अनुभव प्रदान करे । विज्ञानों के लिए विभिन्न जीवों एवं वनस्पतियों के बारे में अधिकाधिक जानकारी दे। विद्यार्थी को ऐसी ही बातें बताई जानी चाहियें जिन्हें वह स्वयं परख सके वर्ना उसकी शब्द के ऊपर अंध-आस्था हो जायेगी। अंक गणीतीय सूत्रों से बचे व ज्यादा से ज्यादा क्रियाएं करवाये । पाठ व विद्यार्थी की क्षमता के बीच संतुलन होना चाहिये ।

सिखाने की सबसे अच्छी विधि वही है जिसमें बच्चे सबसे कम बाध्य होकर सीखते हैं । स्कूल में स्वतंत्रता की सीमा का निर्धारण अध्यापक की क्षमता व प्रतिभा द्वारा निर्धारित होगा।

सीखने के विषय मुख्यत: सात हो सकते हैं ।

तीन विज्ञान : क्योंकि इनके बारे में अधकचरेपन से काम नहीं चलता । इन्हें आप या तो जानते हैं या नहीं जानते । इन्हें सब लोग सीख सकते हैं । अत: ये मानव बधुंत्व की कसौटी के अनुरुप है ।

संप्रेषण के तीन तरीके :

1. शब्द 2. रूपांकन कलाएं 3. संगीत ।

शब्द भी लोगों के बंधुत्व के अनुरूप है । रूपांकन कलाओं में चित्रकारी, मूर्तिशिल्प आदि है । यह इस बात का विज्ञान है कि जो तुम जानते हो, उसका संप्रेषण दूसरों तक कैसे किया जाये । संगीत अपनी भावनाओं और अनुभूतियों को संप्रेषित करने का विज्ञान है ।

हस्तकौशल की सबको आवश्यकता है । अत: यह भी बंधुत्व की कसौटी के अनुरूप है ।

**हस्तश्रम :**

हमारे भ्रष्ट समाज में हस्त-श्रम की जरुरत इसलिए है कि गरीब वर्गों को बिना कुछ भी दिये उनके श्रम का उपयोग करने व खुद कुछ भी श्रम न करने की आकांक्षा आज तक हमारी सभ्यता की सबसे बड़ी कमी रही है ।

**सार्वजनिक शिक्षा :**

तोलस्तोय मानते थे कि जनता सीखने को उत्सुक है । शिक्षित वर्ग उसे सिखाने की तत्पर है किंतु फिर भी जनता शिक्षा का विरोध करती है । तोलस्तोय इसका कारण शिक्षा के बाध्यतामूलक स्वरूप को मानते थे । तोलस्तोय के अनुसार जनता अपनी आवश्यकताओं को सुनिश्चित, स्पष्ट व तर्कसंगत ढंग से समझती है । अत: वह वही सीखना चाहती है जो उसकी आवश्यकताओं के अनुरूप हो । तोलस्तोय के अनुसार रूसी व स्लाव भाषा व अंकगणित का ज्ञान रूसी जनता की मुख्य मांग है ।

इनकी तर्कसंगतता के बारे में तोलस्ताय के तीन तर्क हैं:

1. भाषा और गणित में झूठ और अधकचरेपन के लिए कोई स्थान नहीं, जिनसे जनता इतनी नफरत करती है ।

2. दूसरा उनका कार्यक्षेत्र बहुत व्यापक है ।

3. जनता अपनी इस मांग में इसलिये सही है कि वह प्राथमिक स्कूल से केवल वह चीज सीखेगी जो उसके आगे के ज्ञान के सभी मार्ग प्रशस्त करे और भाषा और गणित का ज्ञान ऐसा ही ज्ञान है ।

तोलस्तोय के अनुसार ''जनता मुफ्त शिक्षा को अविश्वास की नजर से देखती है ।''

सार्वजनिक शिक्षा रूस की सबसे बड़ी आवश्यकता है । यह कभी शुरु नहीं हो सकती, जब तक की इसका नियंत्रण सरकार के हाथों में हैं, क्योंकि राज्य के अपने हितों का सार्वजनिक शिक्षा से कोइ संबंध नहीं, किंतु समाज के हित इससे प्रत्यक्षत: संबंधित हैं कि जनता कितनी शिक्षित है ।

अत: सार्वजनिक शिक्षा का जिम्मा समाज को सौंप दिया जाये । वही रूसी जनता के जीवन की ऐतिहासिक विशेषताओं को ध्यान में रखकर उसका प्रबंध करे । जनता की जरुरतों पर आधारित शिक्षा ही रूस की प्रगति में सहायक है । ◆